

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किशोर छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

निमिषा बाजपेयी

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, आई.ई.एस. विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. रवि बोखारे

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किशोर छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में किशोरावस्था की 100 छात्राओं (50 एकल एवं 50 संयुक्त परिवारों की) का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा करके उन पर विद्याभारती प्रकाशन, जबलपुर की नैतिक मूल्य मापनी का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किशोर छात्राओं के मध्य नैतिक मूल्य—ईमानदारी एवं समग्र नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि नैतिक मूल्य— लगनशीलता/मानवता/विनम्रता में सार्थक अंतर पाया गया।

मुख्य शब्द : एकल एवं संयुक्त परिवार, किशोर छात्राएं, नैतिक मूल्य

वर्तमान युग ज्ञान—विज्ञान तथा तकनीकी का युग है। इसके प्रभाव से आज संसार में हर जगह औद्योगिकीकरण एवं भूमण्डलीकरण हो रहा है, जिसके कारण हमारे देश में विष्व की आधुनिकतम तकनीक आ रही है। साथ ही लगातार बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आने के कारण आज समाज पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है, इनके प्रभाव ने संपूर्ण विष्व को एक परिवार बना दिया है। नवीन तकनीकी के आगमन के पहले यह अपेक्षा थी कि इन तकनीकी संसाधनों के प्रयोग के कारण समाज में दया, करुणा, परोपकार, मैत्री, सत्यनिष्ठा जैसे चारित्रिक गुणों का विकास होगा और नैतिक मूल्यों के द्वारा ही मनुष्य की प्रतिष्ठा होगी तथा केवल धन ही मनुष्य की प्रतिष्ठा का आधार नहीं होगा। पर आज के समय में स्थिति विपरीत है। आज समाज में भौतिकतावाद का सर्वत्र बोलबाला है तथा नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। मनुष्य

की प्रतिष्ठा का आधार मानवीय गुण न होकर भौतिक संसाधन हो गये हैं। आज परिवार में माता-पिता भी यही चाहते हैं कि उनके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर समाज के प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर सकें जिससे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ सके व वह यह चाहते हैं कि समाज में उनको सम्मानजनक दृष्टि से देखा जाए तथा परिचितों, रिश्तेदारों व अन्य लोगों के बीच में उनको प्रतिष्ठा मिल सके। लेकिन इन सब के बीच वर्तमान में समाज में आर्थिक विषमता बढ़ती जा रही है, भौतिकतावाद की इस अंधी होड़ ने आज नैतिक मूल्यों को भी काफी हद तक प्रभावित किया है व्यक्ति आज किसी भी तरह वे तमाम सुविधाएं हासिल करना चाहता है चाहे उसके लिये उसे रिश्वत, झूठ, भ्रष्टाचार आदि का सहारा ही क्यों न लेना पड़े परिणामस्वरूप समाज के नैतिक चरित्र में गिरावट आती जा रही है। जिसका प्रभाव परिवार एवं समाज पर भी पड़ रहा है।

परिवार के वातावरण का बच्चों के व्यक्तित्व तथा चरित्र निर्माण में बहुत ज्यादा योगदान होता है, क्योंकि परिवार बच्चों की सर्वप्रथम पाठशाला एवं माँ संसार की प्रथम शिक्षिका होती है। अच्छे वातावरण वाले परिवारों में बच्चों में बेहतर नैतिक मूल्यों का निर्माण होता है। बच्चों के चरित्र एवं उसके नैतिक मूल्यों के निर्माण से ही किसी भी देश का भविष्य निर्धारित होता है। अतः यदि हमें बच्चों का उचित चरित्र निर्माण करना है तो उसे ऐसा वातावरण प्रदान करना होगा जिससे उसमें स्वयं अनुकरण के द्वारा उचित नैतिक मूल्यों का विकास हा सके।

आज हमारे देश में पाश्चात्य सभ्यता, औद्योगिकीकरण एवं भूमण्डलीकरण के प्रभाव के कारण सयुंक्त परिवारों का तेजी से विघटन हो रहा है तथा एकल परिवारों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। सयुंक्त परिवार में रहने वाला बच्चा पूरे परिवार की जिम्मेदारी होता है तथा उस पर परिवार के बड़े सदस्यों विशेषकर दादा-दादी की संगत का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत एकल परिवारों में बच्चा सिर्फ अपने माता-पिता के ही संपर्क में रहता है एवं कई बार माता-पिता दोनों के ही कामकाजी होने पर वह कई बार उनसे भी घुलमिल नहीं

पाता है, जिसका उसके चरित्र एवं नैतिकता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः वर्तमान अनुसंधान कार्य में एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित छात्राओं के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना बहुत ही ज्यादा सामयिक प्रतीत होने के कारण ही इस अनुसंधान समस्या का चयन इस अनुसंधान कार्य हेतु किया गया है।

प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **बहादुर, अंशुमी एवं धवन, निशा (2008)** ने 'एकल एवं संयुक्त परिवार के बच्चों एवं उनके अभिभावकों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित बच्चों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित अभिभावकों (पिता) के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। एकल एवं संयुक्त परिवार से संबंधित अभिभावकों (माताओं) के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **शर्मा, लक्ष्मी (2017)** ने 'बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में संयुक्त परिवार की भूमिका: एक षोधात्मक अध्ययन' विषय पर शोध लेख लिखा। अपने इस शोध लेख में उन्होंने बताया कि संयुक्त तथा एकल परिवारों के वातावरण में बहुत अधिक अंतर रहता है जिसका प्रभाव बच्चों के नैतिक, चारित्रिक एवं व्यक्तित्व विकास पर भी पड़ता है। संयुक्त परिवार में एक बच्चा पूरे परिवार की जिम्मेदारी होता है जबकि एकल परिवार में बच्चे का निकट संबंध सिर्फ माता-पिता तक सीमित रहता है। इन परिवारों के बच्चों में प्रायः समायोजन की कमी, सहयोग की भावना का अभाव, अन्तर्मुखी स्वभाव देखने को मिलता है। इसके विपरीत संयुक्त परिवारों के बच्चों में बहिर्मुखी स्वभाव, सहयोग की भावना, सुरक्षा की भावना, उच्च समायोजन पाया जाता है। **यादव, सुमन कुमारी एवं शुक्ला, अजय कुमार (2017)** ने 'लखनऊ जिले के एकल एवं संयुक्त परिवार से संबंधित बच्चों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि एकल एवं संयुक्त परिवारों के बच्चों के मध्य कपटपूर्ण व्यवहार करने में सार्थक अंतर पाया गया तथा संयुक्त परिवार के बच्चों में एकल परिवार से

संबंधित बच्चों की तुलना में कपटपूर्ण व्यवहार की आदत ज्यादा पाई गयी। एकल एवं संयुक्त परिवारों के बच्चों के मध्य बेईमानी करने की भावना में सार्थक अंतर पाया गया तथा एकल परिवार के बच्चों में संयुक्त परिवार से संबंधित बच्चों की तुलना में बेईमानी करने की भावना ज्यादा पाई गयी। एकल एवं संयुक्त परिवारों के बच्चों के मध्य झूठ बोलने/चोरी करने की आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **खातून, रईसा (2020)** ने 'बालविकास में माता-पिता एवं परिवार की भूमिका का अध्ययन' विषय पर एक शोध लेखा लिखा। अपने इस शोध लेख में उन्होंने बताया कि परिवार से प्राप्त संस्कार ही बालक के सुदृढ़ चरित्र का निर्माण करते हैं और उसे सही दिशा देकर एक सुयोग्य नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इस दृष्टि से परिवार को सामाजिक गुणों का पालना भी कहा जाता है क्योंकि परिवार न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने में ही अपितु समाज के उत्थान में भी मूल्यवान योगदान देता है। सहयोग, सहानुभूति, सेवा, उत्सर्ग, नैतिकता यह सभी गुण हमारे सामाजिक जीवन के मुख्य आदर्श हैं जिनका शिक्षण बालक को परिवार से ही प्राप्त होता है। **खोदनापुर, बापु (2020)** ने 'बीजापुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित विद्यालयों बच्चों के नैतिक एवं संज्ञानात्मक विकास का मापन एवं तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित बच्चों के नैतिक विकास में सार्थक अंतर पाया गया। बच्चों के नैतिक विकास एवं शैक्षणिक स्थिति के मध्य सार्थक संबंध पाया गया जबकि आयु, लिंग, भाई-बहनों की संख्या, परिवार में सदस्यों की संख्या, अभिभावकों की शिक्षा, अभिभावकों के व्यवसाय एवं बच्चों के नैतिक विकास के मध्य सार्थक संबंध नहीं पाया गया। **घोराई, नंदा दुलाल; खान, शरीफ एवं मोहकुद, ललित ललिताभ (2021)** ने 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर उनको पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया तथा संयुक्त परिवारों से संबंधित विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य एकल परिवारों के विद्यार्थियों की

तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाए गये अर्थात् परिवार के प्रकार (एकल एवं संयुक्त) का विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

उद्देश्य :-

1. एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के नैतिक मूल्य-ईमानदारी/लगनशीलता/मानवता/विनम्रता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के समग्र नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :-

1. एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के नैतिक मूल्य-ईमानदारी/लगनशीलता/मानवता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
2. एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के समग्र नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

न्यादर्श :- न्यादर्श के रूप में होषंगाबाद (नर्मदापुरम) जिले में स्थित हाईस्कूल स्तर के विद्यालयों की कक्षा 9वीं व 10वीं में अध्ययनरत किषोरावस्था की 100 छात्राओं (50 एकल एवं 50 संयुक्त परिवारों की) का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

उपकरण :- उपकरण के रूप में विद्याभारती प्रकाशन, जबलपुर की नैतिक मूल्य मापनी का उपयोग किया गया।

विधि :- सर्वप्रथम होषंगाबाद (नर्मदापुरम) जिले के होषंगाबाद ब्लॉक में स्थित हाईस्कूल स्तर के विद्यालयों की सूची प्राप्त करके इस सूची में से उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा 2 कन्या विद्यालयों का चयन किया गया तथा इन विद्यालयों की कक्षा 9वीं व 10वीं में अध्ययनरत 100

छात्राओं (50 एकल एवं 50 संयुक्त परिवारों की) का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा कर उन पर विद्याभारती प्रकाशन, जबलपुर की 'नैतिक मूल्य मापनी' का प्रशासन किया गया एवं सभी नैतिक मूल्यों का अलग-अलग फलांकन कर प्राप्तांकों के आधार पर मॉस्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा संकलित आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

परिणामों का विश्लेषण :-

परिकल्पना – 1 : एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किशोर छात्राओं के नैतिक मूल्य-ईमानदारी/लगनशीलता/मानवता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 01

एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किशोर छात्राओं के विभिन्न नैतिक मूल्यों संबंधी तुलनात्मक परिणाम

नैतिक मूल्य	परिवार का प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता स्तर
ईमानदारी	एकल	50	10.38	2.27	0.65	0.05 स्तर पर असार्थक
	संयुक्त	50	10.66	2.06		
लगनशीलता	एकल	50	10.84	2.20	2.33	0.05 स्तर पर सार्थक
	संयुक्त	50	9.82	2.17		
मानवता	एकल	50	10.06	2.34	2.91	0.01 स्तर पर सार्थक
	संयुक्त	50	11.46	2.47		
विनम्रता	एकल	50	9.64	2.15	2.35	0.05 स्तर पर सार्थक
	संयुक्त	50	10.72	2.44		

स्वतंत्रता के अंश – 98

0.05, 0.01 स्तर के लिये निर्धारित मान – 1.98, 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के मध्य नैतिक मूल्य – ईमानदारी के मध्यमानों में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.65 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षाकृत कम हैं जबकि एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के मध्य नैतिक मूल्य – लगनशीलता, मानवता व विनम्रता के मध्यमानों में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 2.33, 2.91, 2.35 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05, 0.01, 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान क्रमशः 1.98, 2.63, 1.98 की अपेक्षाकृत अधिक हैं।

अतः इन परिणामों के निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के मध्य नैतिक मूल्य – ईमानदारी में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के मध्य नैतिक मूल्य – लगनशीलता, मानवता व विनम्रता में सार्थक अंतर पाया गया तथा एकल परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं में नैतिक मूल्य – लगनशीलता, संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं की तुलना में उच्च पाए गये जबकि संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं में नैतिक मूल्य – मानवता व विनम्रता, एकल परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं की तुलना में उच्च पाए गये।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई उपपरिकल्पना “एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के नैतिक मूल्य-ईमानदारी में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा” स्वीकृत की जाती है जबकि उपपरिकल्पना “एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के नैतिक मूल्य-लगनशीलता/मानवता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं है” अस्वीकृत की जाती है। समग्र रूप में उपरोक्त परिकल्पना “एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के नैतिक मूल्य-ईमानदारी/ लगनशीलता/मानवता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं है।” आंशिकतः अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना – 2 : हाईस्कूल स्तर के छात्र व छात्राओं के समग्र नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक 02

हाईस्कूल स्तर के छात्र व छात्राओं के समग्र नैतिक मूल्यों संबंधी तुलनात्मक परिणाम

नैतिक मूल्य	परिवार का प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता स्तर
समग्र	एकल	100	40.92	4.70	1.80	0.05 स्तर पर असार्थक
	संयुक्त	100	42.66	4.99		

स्वतंत्रता के अंश – 98

0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 1.98

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किशोर छात्राओं के मध्य समग्र नैतिक मूल्यों के मध्यमानों में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इसके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.80 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान क्रमशः 1.98 की अपेक्षाकृत कम है।

अतः इन परिणामों के निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किशोर छात्राओं के मध्य समग्र नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई उपपरिकल्पना “एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किशोर छात्राओं के मध्य समग्र नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा” स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :-

1. एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के मध्य नैतिक मूल्य – ईमानदारी में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के मध्य नैतिक मूल्य – लगनशीलता, मानवता व विनम्रता में सार्थक अंतर पाया गया तथा एकल परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं में नैतिक मूल्य – लगनशीलता, संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं की तुलना में उच्च पाए गये जबकि संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं में नैतिक मूल्य – मानवता व विनम्रता, एकल परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं की तुलना में उच्च पाए गये।
2. एकल एवं संयुक्त परिवारों से संबंधित किषोर छात्राओं के मध्य समग्र नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

- जैन, षुद्धात्म प्रकाश एवं जैन, ममता (2012) : **मूल्य शिक्षा और उसका शिक्षण**, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, कचहरी घाट, आगरा, पृष्ठ क्रमांक 11, 12, 13
- हकीम, एम.ए.; अस्थाना, विपिन एवं जायसवाल, सीताराम (1991) : **व्यक्तित्व मनोविज्ञान**, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2009) : **मूल्य शिक्षा – क्या क्यों और कैसे**, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृष्ठ क्रमांक 4
- कुप्पुस्वामी, बी. (1990) : **बाल-व्यवहार और विकास**, कोणार्क पब्लिशर्स प्रा. लि., दिल्ली
- पाण्डेय, रामशकल (2000) : **मूल्य शिक्षा की आवश्यकता**, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ क्रमांक 45, 47
- पाण्डेय, रामशकल एवं मिश्र, करुणाशंकर (2009) : **मूल्य शिक्षण**, हास्पिटल रोड, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- शर्मा, आर.के. व दुबे, श्रीकृष्ण (2007) **मूल्यों का शिक्षण**, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा

- शर्मा, आर.ए. (1995) **मानव मूल्य एवं शिक्षा**, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
 - श्रीवास्तव, डी.एन. (नवीन संस्करण) **सांख्यिकी एवं मापन**, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- संबंधित अध्ययन –
- ❖ **बाकलीवाल, ममता एवं अग्रवाल, रंजना (2009)** “व्यवसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन”, *रिसर्च लिंक – 62, वॉल्यूम -VIII (3), मई 2009, 121–123*
 - ❖ **खातून, रईसा (2020)** “बालविकास में माता– पिता एवं परिवार की भूमिका का अध्ययन”, *International Journal of Home Science, Volume 6, Issue 2, 2020] Page No. 230-231*
 - ❖ **शर्मा, लक्ष्मी (2017)** “बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में संयुक्त परिवार की भूमिका: एक षोधात्मक अध्ययन”, *Innovation The Research Concept, Volume 2, Issue 3, April 2017, Page No. 29-31*
 - ❖ **Bahadur, Anshubhi and Dhawan, Nisha (2008)** “Social Value of Parents and Children in Joint and Nuclear Families”, *Journal of Indian Academy of Applied Psychology, Volume 34, Special Issue, April 2008, Page No. 74-80*
 - ❖ **Ghorai, Nanda Dulal; Khan, Sharif and Mohakud, Lait Lalitabh (2021)** “Influence of family background on moral values in higher secondary students”, *East African Scholars Journal of Education, Humanities and Literature, Volume 4, Issue 2, February 2021, Page No. 41-47*
 - ❖ **Khodnapur, Bapu (2020)** “A comparative study to assess the cognitive and moral development of school age children among joint versus nuclear family in selected rural area of Bijapur district”, *IP Journal of Paediatrics and Nursing Science, Volume 3, Issue 4, 2020, Page No. 104-111*
 - ❖ **Yadav, Suman Kumari and Shukla, Ajai Kumar (2017)** “A Comparative Study of Moral Values among the Children Belonging to Nuclear and Joint Families of Lucknow District”, *Chetna International Educational Journal, Volume 4, Issue 1, May-August 2017, Page No. 118-124*